International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(II), January - March, 2024, pp. 198-201

स्वामी विवेकानंद के राजनीतिक विचार

श्री चेनाराम*

सार

स्वामी विवेकानन्द प्लेटो, अरस्तु या मार्क्स की भांति कोई राजनीतिक चिन्तक नहीं थे और न ही उन्होंने किन्हीं राजनीतिक सिद्धान्तों को विकसित किया, लेकिन स्वामी विवेकानंद भारतीय राष्ट्रीयता के महान् पुरोधा थे तथा मानव कल्याण, व्यक्ति के आत्मविश्वास की प्रेरणा देने वाले थे। स्वामी विवेकानंद ने भारत के बाहर विदेश में भी भारतीय संस्कृति का लोहा मनवाया व विश्व कल्याण को संदेश दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में स्वामी विवेकानन्द के राजनीतिक विचारों का अध्ययन किया गया है।

शब्दकोशः *राष्ट्रीयता, मानव कल्याण, आध्यात्मिक स्वतंत्रता, विश्व धर्म संसद, अन्तर्राष्ट्रीयतावाद, विश्व बंधुत्व।*

प्रस्तावना

विवेकानंद का बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। विवेकानंद पर अपनी माता का विशेष प्रभाव पड़ा। बंगाल के महान् संत श्री रामकृष्ण परमहँस से भेंट उनके जीवन का क्रान्तिकारी मोड़ थी। रामकृष्ण परमहँस की मृत्यु के बाद उन्होंने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया तथा 1893 में शिकागों में सर्वधर्म सम्मेलन में भारतीय संस्कृति का संदेश दिया। उनका भाषण भारत की सार्वभौमिकता और विशाल हृदयता से ओत प्रोत था, जिसने हर किसी को मुग्ध कर दिया। 1897 में बैलूर में उन्होंने रामकृष्ण मिशन स्थापित किया। 1898 में उन्होंने पश्चिम की दूसरी यात्रा की, सेन फ्रांसिस्कों में शांति आश्रम और वेदान्त सोसाइटी की स्थापना की। विवेकानंद के दर्शन के मुख्यतः तीन स्त्रोत थे प्रथम वेदों तथा वेदान्त की महान् परम्परा, द्वितीय रामकृष्ण के साथ सम्पर्क एवं तृतीय उनके अपने जीवन के अनुभव।

स्वामी विवेकानंद का राजनीतिक चिन्तन :– स्वामी विवेकानन्द उस श्रेणी के राजनीतिक दार्शनिक नहीं थे जिसमें हम हॉब्स, रूसो, मार्क्स को समझते है क्योंकि उन्होंने इन दार्शनिकों की भांति राजनीतिक चिन्तन का कोई सम्प्रदाय कायम नहीं किया। राजनीति में उनका कोई विश्वास न था और न ही उन्होंने किन्हीं राजनीतिक कार्यकलापों में कभी भाग लिया। उन्होंने स्वयं कहा था कि, ''मैं न राजनीतिज्ञ हूँ, न राजनीतिक आंदोलनकारी। मैं केवल आत्म तत्व की चिन्ता करता हूँ, जब यह ठीक होगा तो सब काम अपने आप ठीक हो जाएंगे।'' फिर भी उनके भाषणों और विचारों में राजनीति का जो दर्शन मिलता है वह उन्हें दूसरे राजनीतिक चिन्तकों से कहीं आगे ले जाता है।

आधुनिक भारत के राजनीतिक चिन्तन के विकास को व्यवस्थित ढंग से समझने के लिए स्वामी विवेकानंद के दर्शन का अध्ययन आवश्यक है :–

---

* सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, राजकीय बाँगड़ महाविद्यालय, डीडवाना, राजस्थान।

- **राष्ट्रवाद का धार्मिक सिद्धान्त :** विवेकानंद का विश्वास था कि प्रत्येक राष्ट्र का जीवन किसी एक प्रमुख तत्व की अभिव्यक्ति है। उनकी दृष्टि में धर्म भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण रहा है। विवेकानंद के शब्दों में ''जिस प्रकार संगीत में एक प्रमुख स्वर होता है वैसे ही हर राष्ट्र के जीवन में एक प्रधान तत्व होता है अन्य सब तत्व उसी में केन्द्रित होते है। भारत का तत्व है धर्म।'' इसीलिए उन्होंने राष्ट्रवाद के एक धार्मिक सिद्धान्त की नींव का निर्माण करने का कार्य किया। उनका कहना था कि राष्ट्र की भावी महानता का निर्माण उसके अतीत की नींव पर ही किया जा सकता है।

विवेकानंद कहा करते थे कि अतीत में भारत की सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति मुख्यतः धर्म के क्षेत्र से ही हुई थी। धर्म ने भारत में एकता तथा स्थिरता को बनाए रखने के लिए काम किया था इसलिए राष्ट्रीय जीवन को धार्मिक आधार पर संगठित किया जाना चाहिए। धर्म ही निरन्तर भारतीय जीवन का आधार रहा है, इसलिए सभी सुधार धर्म के माध्यम से ही किए जाने चाहिए। अतः राष्ट्रवाद का आध्यात्मिक सिद्धान्त राजनीतिक चिन्तन को विवेकानंद की देन है। बंकिम की भाँति विवेकानंद भी भारत को एक आराध्य देवी मानते थे।

विवेकानंद हीगल की तरह राष्ट्र की महत्ता के प्रतिपादक थे। उनके अनुसार भारत को अपने अध्यात्म से पश्चिम को विजित करना होगा। उनका कहना था ''एक बार पुनः भारत को विश्व की विजय करनी है। उसे पश्चिम की अध्यात्मिक विजय करनी है।'' विवेकानंद भारतीय राष्ट्रवाद के सन्देशवाद थे। उन्होंने देशवासियों से कहा – ''बंकिमचंद्र को पढ़ो तथा सनातन धर्म और उनकी देशभक्ति को ग्रहण करो'' ''जन्मभूमि की सेवा को अपना सबसे बड़ा कर्त्तव्य समझों।''

विवेकानंद ने राष्ट्रवाद को नए स्वरूप में प्रस्तुत किया उसे अपनी ही धरती पर, अपने ही पैरों पर खड़े होने की प्रेरणा दी।

स्वतंत्रता सम्बंधी धारणा

विवेकानंद का स्वतंत्रता विषयक दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। उनका कहना था कि सम्पूर्ण विश्व अपनी अनवरत गति के द्वारा मुख्यतः स्वतंत्रता की ही खोज कर रहा है। उन्होंने कहा, ''जीवन सुख और समृद्धि की एकमात्र शर्त चिन्तन और कार्य में स्वतंत्रता है। जिस क्षेत्र में यह नहीं है, उस क्षेत्र में मनुष्य जाति और राष्ट्र का पतन होगा।''

विवेकानंद ने स्वतंत्रता को मनुष्य का प्राकृतिक अधिकार माना और समाज के सभी सदस्यों को समान अवसर प्राप्त होने की बात कही। उन्हीं के शब्दों में, ''प्राकृतिक अधिकार का अर्थ है कि हमें अपने शरीर, बुद्धि और धन का प्रयोग अपनी इच्छानुसार करने दिया जाए और हम दूसरों को कोई हानि नहीं पहुँचाए।''

स्वामी विवेकानंद ने स्वतंत्रता को मानव विकास की अनिवार्य शर्त बताया। यह मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य है इसी को मोक्ष कहा जाता है। समाज तथा राज्य को इसमें बाधा डालने का कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने आध्यात्मिक स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए कहा कि इसको प्राप्त करने के लिए कर्म, उपासना और ज्ञान तीन साधन होते है। सामाजिक क्षेत्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता समानता पर आधारित होती है।

विचार की स्वतंत्रता व शक्ति

स्वामी विवेकानंद ने विचारों की स्वतंत्रता को जीवन, विकास और कल्याण की एकमात्र शर्त माना है जिसके अभाव में मनुष्य, जाति और राष्ट्र अवनति की ओर जाता है। स्वामी विवेकानंद ने शक्ति को धर्म माना है। उन्होंने कहा कि ''मेरे धर्म का सार शक्ति है जो धर्म हृदय में शक्ति का संचार नहीं करता वह मेरी दृष्टि में धर्म नहीं है।'' विवेकानंद ने निर्भयता के सिद्धान्त को दार्शनिक वेदान्त के आधार पर उचित ठहराया। आत्मबल के आधार पर निर्भय होकर खड़ा होना अत्याचार तथा उत्पीड़न का सर्वोत्तम प्रतिकार था। राष्ट्र व्यक्तियों से ही बनता है, अतः सब व्यक्तियों को अपने में पुरूषत्व, मानव गरिमा तथा सम्मान की भावना आदि श्रेष्ठ गुणों को विकास करना चाहिए। अतीत में भारत के राष्ट्रीय जीवन का निर्माण समाज सेवा तथा व्यक्ति की मुक्ति के आदर्शों की नींव पर किया गया था। इन श्रेष्ठ आदर्शो को पुनः प्रतिष्ठित करना और शक्तिशाली बनाना है।

अधिकारों की अपेक्षा कर्त्तव्यों पर बल

विवेकानंद ने कर्त्तव्यों पर बल दिया। वे चाहते थे कि सभी व्यक्ति और समूह अपने कर्त्तव्यों और दायित्वों के पालन में ईमानदार हों। मानव का गौरव इस बात से नहीं कि वह अपने तथा अपने अधिकारों के लिए आग्रह करे, उनकी गरिमा इस बात में है कि वह सार्वभौम शुभ की सिद्धि हेतु अपना उत्सर्ग कर दे।

समाजवाद

विवेकानंद ने कहा था ''मैं इसलिए समाजवादी नहीं हूँ कि वह पूर्ण व्यवस्था है, बल्कि इसलिए की आधी रोटी न कुछ से अच्छी है।'' उन्होंने जातिगत उत्पीड़न की भर्त्सना की और आत्म तथा ब्रह्म में आस्था रखने के नाते मनुष्य तथा मनुष्य में भेद को अस्वीकार किया। विवेकानंद ने देश के सब निवासियों के लिए 'समान अवसर के सिद्धान्त' का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि ''यदि प्रकृति में असमानता है तो भी सबके लिए समान अवसर होना चाहिए। विवेकानंद की रचनाओं में सामाजिक समानता का समर्थन देखने को मिलता है उनका सामाजिक समानता का सिद्धान्त तत्वतः समाजवादी है। किन्तु समाजवाद के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विवेकानंद हिंसात्मक क्रान्ति का समर्थन नहीं करते। विवेकानंद के चिन्तन का मूल आध्यत्मिकता है। उसमें चरित्र की शुद्धता तथा भ्रातृत्व पर अधिक बल दिया गया है।

आदर्श राज्य की धारना

विवेकानंद के अनुसार मानवीय समाज पर चार वर्ण – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र बारी बारी से राज्य करते है। विवेकानंद के अनुसार यदि ऐसा राज्य स्थापित करना सम्भव हो जिसमें ब्राह्मण काल का ज्ञान, क्षत्रिय काल की सभ्यता, वैश्य काल का प्रचार भाव और शुद्र काल की समानता रखी जा सके तो वह आदर्श राज्य होगा।

अर्न्तराष्ट्रीयतावाद एवं विश्व बंधुत्व

विवेकानंद उग्र राष्ट्रवाद के बजाय अन्तर्राष्ट्रवादी थे। उनके अन्तर्राष्ट्रवादी एवं विश्व बन्धुत्व की झलक हमें शिकागो धर्म संसद में देखी गई ''जहां अन्य सब प्रतिनिधि अपने–अपने धर्म के ईश्वर की चर्चा करते रहे, वहां केवल विवेकानंद ने ही सबके ईश्वर की बात की। ''विवेकानंद मानव–मानव के भेद को स्वीकार नहीं करते थे। वे हिन्दू धर्म तथा भारत से असीम प्यार करते थे, किन्तु अन्य किसी राष्ट्र से उन्हें घृणा नहीं थी।

साराशं

स्वामी विवेकानंद प्रधानतः भिक्षु, धर्मोपदेशक तथा सन्यासी थे, किन्तु उनकी देशभक्ति की तुलना मेजिनी, बिस्मार्क की भावनाओं से की जा सकती है। भारत में अनेक महापुरूषों पर विवेकानंद के व्यक्तित्व और विचारों का प्रभाव पड़ा है। सुभाष चन्द्र बोस विवेकानंद को अपना आध्यात्मिक गुरू मानते थे। अरविन्द उनके महान् प्रशंसक थे। स्वामी विवेकानंद ने विदेशों में वैदिक धर्म की कीर्ति को प्रसारित कर भारतीयों के सोये आत्मविश्वास को जाग्रत किया। स्वामी विवेकानंद के अनुसार भारत की जीवन शक्ति है उसका धर्म, इसी प्रकार पश्चिम की जीवन शक्ति है विज्ञान। विवेकानंद पूर्व और पश्चिम के बीच समन्वय स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने धर्म और विज्ञान के मध्य सामंजस्य स्थापित करने हेतु प्रयास किया तथा इस बात पर बल दिया कि इस सामंजस्य में ही विश्व का कल्याण निहित है। स्वामी विवेकानंद ने प्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक सिद्धान्त का प्रतिपादन नहीं किया लेकिन उनकी शिक्षाओं और उनके व्यक्तित्व का राष्ट्रवादी आन्दोलन विशेषतया बंगाल के राष्ट्रवादी आन्दोलन पर गहरा प्रभाव पड़ा। आध्यात्मिक स्वतंत्रता, विचारों की स्वतंत्रता, समानता के क्षेत्र में उनके विचार महत्वपूर्ण साबित हुए। स्वामी विवेकानंद ने देशवासियों को आत्म सम्मान, शान्ति, निर्भयता व मानव गरिमा की प्रेरणा दी। वेदान्त का प्रचार, प्रेम, विश्व बन्धुत्व पर बल दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. पुखराज जैन, प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा 2020
2. रामरत्न एवं रूचि त्यागी, भारतीय राजनीतिक चिन्तन, मयूर पेपर बैक्स, 2003
3. योगेश कुमार शर्मा, भारतीय राजनीतिक चिन्तक, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2001
4. एस.एल. नागौरी, प्राचीन भारतीय चिंतन, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर
5. आशा प्रसाद, स्वामी विवेकानंद एक जीवनी, डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली 2005
6. राजेन्द्र प्रकाश गुप्त, स्वामी विवेकानंद : व्यक्तित्व और विचार, राधा प्रकाशन, दिल्ली, 2006
7. नरेन्द्र कोहली, स्वामी विवेकानंद नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2007
8. राजीव रंजन, युगदृष्टा विवेकानंद, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 2008
9. भवान सिंह राणा, स्वामी विवेकानंद, डायमंड एंड सन्स, नई दिल्ली, 2005
10. उपेन्द्र सिंह, भारती राजनीतिक विचारक, ग्रन्थ विकास, जयपुर, 2009
11. कर्ण सिंह, हिन्दू दर्शन : एक समकालीन दृष्टि, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2001
12. पवित्र कुमार शर्मा, विवेकानंद की वाणी, इंडिया बुक्स कंपनी, नई दिल्ली, 2006

❖◆❖